

सूरह इन्फितार^[1] - 82

سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ

सूरह इन्फितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- "इन्फितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (कब्रें) खोल दी जायेंगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है^[1]

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝

1 (1-5) इन में प्रलय के दिन आकाश ग्रहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।^[1]
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।
11. जो माननीय लेखक हैं।
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।^[2]
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।
14. और दुराचारी नरक में।
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।^[3]

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّدَكَ مَتَدًا ۝

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

كَلَّا بَلْ تَكَذِّبُونَ بِالذِّينِ ۝

وَأَنْ عَلَيْكُمْ حَفِظِينَ ۝

كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝

إِنَّ الْآبِرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

وَأِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الذِّينِ ۝

وَمَاهُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

दशा गुजरेगी उस का विव्रण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तुत उस के सामने आ जायेंगे।

- 1 (6-8) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखिये: तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?
- 2 (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।
- 3 (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?
19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।^[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

كُلُّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ
يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

1 (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भयानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय बे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुर्आन दिखा रहा है। कुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।